भारत सरकार

कृषि मंत्रालय

पशुपालन, डेयरी और मत्स्यपालन विभाग

राज्‍य सभा

तारांकित प्रश्न संख्या- **156**

### दिनांक 06 दिसम्‍बर, 2013 के लिए प्रश्न

विषय : देशी गायों की संख्‍या में गिरावट

156 : डॉ0 ज्ञान प्रकाश पिलानिया:

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) पशु गणनाओं के अनुसार वर्तमान में तथा तमाम वर्षों में देशी तथा संकर गायों की संख्‍या कितनी-कितनी है;

(ख) उनकी संख्‍या में वृद्धि अथवा कमी कितने प्रतिशत रही है और इसके क्‍या कारण हैं;

(ग) क्‍या होतस्‍टेन फ्रेजियन तथा जर्सी का प्रयोग करते हुए कार्यान्वित किए जा रहे आनुवांशिक उन्‍नयन कार्यक्रमों से देसी मवेशियों की उपेक्षा होती जा रही है;

(घ) गायों की विदेशी तथा घरेलू नस्‍ल के उन्‍नयन कार्यक्रमों में विगत दस वर्षों के दौरान तुलनात्‍मक रूप से कितनी धनराशि व्‍यय की गई है; और

(ड़) क्‍या गायों की विदेशी नस्‍लों को इस्‍तेमाल करते हुए आनुवांशिक उन्‍नयन कार्यक्रमों से गरीब/सीमांत किसानों को सहायता नहीं मिली है क्‍योंकि विदेशी नस्‍ल की देखरेख महंगी है?

**उत्तर**

# **कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री**

(डा0 चरण दास महंत)

1. और (ख): 2003 की 17वीं पशुधन संगणना और 2007 की 18वीं पशुधन संगणना के अनुसार, 2003 में देशी मादा गोपशुओं की संख्‍या 8.29 करोड़ थी जो बढ़कर 2007 में 8.92 करोड़ हो गई है और 2003 में मादा संकर गायों की संख्‍या 197 करोड़ से थी जो बढ़कर 2007 में 2.62 करोड़ हो गई है। 2003 से 2007 तक की अवधि के दौरान देशी मादा गोपशु के मामले में 7.6% और मादा संकर गायों के मामले में 32.9% की वृद्धि हुई है। मादा संकर गोपशु के मामले में परिवर्तन में अधिक अन्‍तर के कारण दुग्‍ध उत्‍पादन की अपेक्षाकृत अधिक मांग और दूध की प्रति व्‍यक्ति उपलब्‍धता, चरागाहों का क्षेत्र कम हो जाना, गोपशु के लिए चारे की कम उपलब्‍धता, सघन और यंत्रीकृत कृषि तथा देश में किसानों के सामाजिक आर्थिक स्‍तर में परिवर्तन होना हैं।

(ग): जी, नहीं। प्रजनन नीति तैयार करना राज्‍य विषय है और अधिकांश राज्‍यों ने अपनी प्रजनन नीति बना ली है तथा नीति दस्‍तावेज में देशी नस्‍लों के विकास और संरक्षण को शामिल किया है। राज्‍यों द्वारा किए गए प्रयासों को संपूर्ण और पूरक करने के उद्देश्‍य से, सरकार ‘राष्‍ट्रीय गोपशु और भैंस प्रजनन परियोजना’ क्रियान्वित कर रही है जिसमें देशी नस्‍लों के विकास और संरक्षण पर ध्‍यान केंद्रित किया गया है। परियोजना की उपलब्धियों में एक उपलब्धि उन्‍नत किस्‍म के देशी पशुओं की उपलब्‍धता में वृद्धि करनी होगी। कृत्रिम गर्भाधान और प्राकृतिक सेवाओं, दोनों के माध्‍यम से गोपशु की महत्‍वपूर्ण देशी नस्‍लों के प्रजनन ट्रैक्‍टों में चयनित प्रजनन और गुणन से उच्‍च गुणवतापूर्ण स्‍वदेशी नस्‍लों के पशुओं की नियमित तथा सतत आपूर्ति होगी जिससे देश की समग्र अर्थव्‍यवस्‍था में अत्‍यधिक सुधार होगा।

(घ): राष्‍ट्रीय गोपशु और भैंस प्रजनन परियोजना के अधीन, इस योजना के आरम्‍भ होने के समय से अब तक 1072.27 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं जिनमें वर्तमान वर्ष के दौरान जारी किए गए 82.56 करोड़ रुपये शामिल हैं।

(ड.): यह स्‍पष्‍ट है कि छोटे और भूमिहीन किसान अधिक उत्‍पादनकारी संकर गोपशु या विदेशी नस्‍लें रखने में समर्थ नहीं हो सकते हैं। तथापि, इन पशुओं से प्राप्‍त उत्‍पादन के कारण यह विचार हमेशा सही नहीं हो सकता कि संकर पशुओं और विदेशी नस्‍लों को रखना महंगा होता है। संकर पशु अधिकतर उन किसानों द्वारा रखे जाते हैं जो अधिक निवेश- अधिक उत्‍पादन (वाणिज्यिक) या मध्‍यम निवेश-मध्‍यम उत्‍पादन (अर्द्ध-वाणिज्यिक) किस्‍म की उत्‍पादन प्रणालियां अपना रहे हैं जबकि देशी पशु अधिकांशत: उन किसानों द्वारा रखे जाते हैं जो कम निवेश और कम उत्‍पादन किस्‍म की उत्‍पादन प्रणालियां अपना रहे हैं।

\*\*\*\*\*\*